उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय चार

अर्थ के लिए पद्धतियाँ

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम .

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. विषयनिष्ठक 2

क. पृष्ठभूमि 3

ख. प्रभाव 4

III. आत्मनिष्ठक 6

क. पृष्ठभूमि 6

ख. पृष्ठभूमि 7

IV. संवादात्मक 9

क. पृष्ठभूमि 10

ख. पृष्ठभूमि 10

ग. तुलना 12

1. अधिकार-संवाद और विषयनिष्ठक 13
2. अधिकार-संवाद और आत्मनिष्ठक 13

V. सारांश 15

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय चार
अर्थ के लिए पद्धतियाँ

परिचय

किसी एक या अन्य समय पर, हम सबने संयोग से लोगों को बाइबल में दिए हुए किसी एक संदर्भ के ऊपर असहमत होते हुए सुना होगा। अक्सर, ऐसा वार्तालाप एक ही जैसे तरीके से अन्त होता है। एक व्यक्ति ऐसा कहता है कि, "ठीक है, आपकी व्याख्या आपके विचार मात्र हैं।" परन्तु अन्य व्यक्ति ऐसे प्रतिक्रिया व्यक्त करता है कि, "नहीं, यह मेरे विचार मात्र नहीं है। यह सच्चाई है।" ऐसी टिप्पणियाँ बाइबल की व्याख्या में एक सबसे ज्यादा मौलिक प्रश्न को प्रतिबिम्बित करती है: जब हम बाइबल पढ़ते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इसका क्या अर्थ है, तो क्या हमारा निष्कर्ष विषयनिष्ठक सच्चाई है, या आत्मनिष्ठक अर्थात् व्यक्तिपरक विचार, या कुछ ऐसा जो इन दोनों के बीच में हो?

यह हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव,* में अध्याय चार है, और हमने इसका शीर्षक "अर्थ के लिए पद्धतियाँ" दिया है। इस अध्याय में, हम पवित्रशास्त्र के अर्थ के लिए व्याख्याकारों के द्वारा पहचानी गई और विवरण की गई कुछ पद्धतियों को देखेंगे।

जब हम किसी एक संदर्भ के अर्थ के बारे में प्रश्न करना आरम्भ करते हैं जिसे हम बाइबल में पाते हैं, तो यह हमारी सहायता ज्ञान की वस्तुओं और ज्ञान के विषयों के बीच एक मौलिक अन्तर आरम्भ करते हुए करता है। ज्ञान की वस्तुयें वे चीजें हैं जिन्हें हम समझने की कोशिश करते हैं। और ये वस्तुयें या तो अमूर्त हो सकती हैं जैसे कि विचार, या फिर मूर्त अर्थात् ठोस जैसे कि लोग या स्थान।

उदाहरण के लिए, जीवविज्ञानी ऐसी वस्तुओं जैसे जानवरों और पौधों का अध्ययन करते हैं। और संगीतकार ऐसी वस्तुओं जैसे कि संगीत या संगीत वाद्ययंत्रों का अध्ययन करते हैं। इसके विपरीत, ज्ञान के विषय वे होते हैं जिनका अध्ययन लोग कर रहे होते हैं। जीवविज्ञान के क्षेत्र में, जीवविज्ञानी स्वयं ज्ञान के विषय हैं। और संगीत के क्षेत्र में, संगीतकार स्वयं ज्ञान के विषय हैं।

इसलिए, जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं, तो हम आत्मनिष्ठ अर्थात् व्यक्तिपरक होते हैं, क्योंकि हम वे हैं जो कि व्याख्या कर रहे हैं। और हमारे अध्ययन की विषय बाइबल है, क्योंकि यह वह है जिसकी हम व्याख्या करने का प्रयास कर रहे हैं।

अब, यह देखना आसान है कि दोनों में अर्थात् ज्ञान के विषय और ज्ञान प्राप्त किए जाने वाले अर्थात् आत्मनिष्ठक में प्रत्येक तरह की मानवीय समझ सम्मिलित है। परन्तु कैसे दोनों अर्थात् ज्ञान का विषय और ज्ञान प्राप्त किए जाने वाला अर्थात् आत्मनिष्ठक एक साथ मिलकर ज्ञान की खोज का कार्य करते हैं?

ठीक है, मानवीय ज्ञान की प्राप्ती के लिए विषयनिष्ठ और आत्मनिष्ठ के सम्बन्ध में दी गई तीन मुख्य पद्धतियों के बारे में बात करना अक्सर सहायतापूर्ण रहा है। सबसे पहले, कुछ लोग ऐसी पद्धति की ओर झुकाव रखते हैं जिसे हम विषयनिष्ठतावाद या निष्पक्षतावाद भी कहते हैं। विषयनिष्ठवादी यह विश्वास करते हैं कि सही परिस्थितियों की अधीनता में, निष्पक्ष या विषयनिष्ठ ज्ञान तक पहुँचा जा सकता है। दूसरा, अन्य लोगों का झुकाव एक अन्य पद्धति की ओर है जिसे आत्मनिष्ठवाद अर्थात् व्यक्तिपरक कहते हैं। आत्मनिष्ठवादी विश्वास करते हैं कि हमारा ज्ञान सदैव हमारे व्यक्तिगत् पूर्वाग्रहों से प्रभावित होते हुए, निष्पक्ष विषयनिष्ठता को असम्भव बना देता है। और तीसरा, कुछ लोगों ने एक बीच का तीसरा मार्ग निकाला है जिसे हम संवादवाद का कह सकते हैं। यह पद्धति "संवाद" या फिर विषयनिष्ठक वास्तविकता और हमारे आत्मनिष्ठक दृष्टिकोणों के बीच निरन्तर परस्पर क्रिया करते रहने पर जोर देती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि, ये तीनों पद्धतियाँ बाइबल की व्याख्या में उपयोग की गई हैं। इसलिए, जब हम इस अध्याय में पवित्रशास्त्र के अर्थ पर विचार करते हैं तो, हमारा ध्यान इनमें से प्रत्येक के ऊपर होगा जब हम इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करेंगे: क्या बाइबल के संदर्भ के अर्थ के प्रति हमारी समझ विषयनिष्ठक, आत्मनिष्ठक या फिर संवादात्मक है?

इस अध्याय में, हम हमारे ध्यान को अर्थ के लिए इन तीनों मुख्य पद्धतियों में से प्रत्येक के ऊपर केन्द्रित करेंगे। सबसे पहले, हम विषयनिष्ठक पद्धतियों के ऊपर ध्यान देंगे। दूसरा, हम आत्मनिष्ठक पद्धतियों को देखेंगे। और तीसरा, हम संवादात्मक पद्धतियों की खोज करेंगे। आइए पवित्रशास्त्र के अर्थ की विषयनिष्ठक पद्धतियों के साथ आरम्भ करें।

विषयनिष्ठक

हम सभी उन लोगों के पास दौड़ कर जाते हैं जिनके पास इस या उस विषय के लिए विचार होते हैं, परन्तु चाहे कुछ भी क्यों न हो वे जिस विषयनिष्ठक सच्चाई में विश्वास करते हैं उसके समर्थन के लिए कोई योग्यता नहीं होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, ऐसी ही बात तब सत्य हो जाती है जब बाइबल की व्याख्या करने की बात आती है। बाइबल के संदर्भ क्या कहते हैं उनके ऊपर विचारों की कमी नहीं है, परन्तु अधिकांश लोग अपनी व्याख्याओं को विषयनिष्ठक तथ्यों में आधारित करने का प्रयास भी नहीं करते हैं। वे केवल सामान्य रूप से स्वीकार करते हैं कि वे बाइबल का एक संदर्भ क्या कहता है, के ऊपर विश्वास करते हैं और उसे यों ही छोड़ देते हैं। जब वे अक्सर इस समस्या में पर्याप्त मात्रा में चले जाते हैं, तो यह बहुत ही ज्यादा निराश कर देने वाला होता है, और यह हम सभों को पवित्रशास्त्र की समझ को प्राप्त करने के लिए मजबूर करता है जो कम से कम कुछ सीमा तक विषयनिष्ठक हैं।

यूरोप में सत्रहवीं और अठारहवीं सदियों से, विषयनिष्ठतावाद ने बाइबल की व्याख्या को बहुत ज्यादा प्रभावित किया है। सार में यह कहना, विद्वान यह विश्वास करते हैं कि वे बाइबल की व्याख्या निष्पक्षता से कर सकते हैं, और वे यह निश्चितता के साथ सम्बन्धपरक रूप में इसके अर्थ को जान सकते हैं। अधिकांश विषयनिष्ठतावादी यह तर्क नहीं देते हैं कि जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं तो हम अपने सभी व्यक्तिगत् पूर्वाग्रहों और दृष्टिकोण को दूर कर सकते हैं। परन्तु वे यह विश्वास करते हैं कि हम इन्हें हमारी अपनी व्याख्या को प्रभावित करने के लिए रोक सकते हैं, ताकि हम पवित्रशास्त्र की सही समझ तक पहुँच सकें। उदाहरण के लिए, हम सभी बाइबल के पहले संदर्भ को जानते हैं, जहाँ उत्पत्ति 1:1 में ऐसा कहा गया है कि:

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:1)।

अधिकांश लोग सहमत होंगे कि इस संदर्भ के मूल अर्थ को समझना अपेक्षाकृत आसान है। कम से कम, हम आत्मविश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि इसका अर्थ यह है कि, "परमेश्वर ने सब कुछ बनाया।"

जब विषयनिष्ठतावादी यह कहते हैं कि उत्पत्ति 1:1 का अर्थ यह है कि "परमेश्वर ने सब कुछ बनाया," तो वे यह विश्वास करते हैं कि उन्होंने इस संदर्भ को बिना किसी पूर्वाग्रह के समझा। इसलिए उनमें इस सोच का झुकाव है कि प्रत्येक जो उनकी व्याख्या का इन्कार करता है वह सामान्य रूप से एक स्पष्ट तथ्य के साथ असहमत है।

अब, क्यों बाइबल के बहुत से व्याख्याकारों ने पवित्रशास्त्र के अर्थ को जानने के लिए इस पद्धति का अनुसरण किया है? और बाइबल व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतंत्र विज्ञान में विषयनिष्ठतावाद के क्या परिणाम आए हैं?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, हम व्याख्या की विषयनिष्ठक पद्धति की जाँच-पड़ताल दो दिशाओं के ऊपर देखने से करेंगे। सबसे पहले, हम इन पद्धतियों की दार्शनिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को स्पर्श करेंगे। और दूसरा, हम बाइबल की व्याख्या पर इनके प्रभाव का उल्लेख करेंगे। आइए सबसे पहले हम व्याख्या के लिए विषयनिष्ठक पद्धतियों की पृष्ठभूमि को देखते हुए आरम्भ करें।

पृष्ठभूमि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विषयनिष्ठतावाद को आधुनिक दर्शनशास्त्र की धारा के सबसे मुख्य प्रवाह के साथ पहचाना जा सकता है – इस प्रवाह को वैज्ञानिक बुद्धिवाद कह कर पुकारा जाता है। रेने देकार्त, जो कि 1596 से 1650 तक रहा, को अक्सर आधुनिक बुद्धिवाद का जनक कहा जाता है क्योंकि उसने तर्क को सच्चाई के सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया। इस दृष्टिकोण से, धर्म, परंपरायें, मान्यतायें, संस्थायें, और अंधविश्वास जैसी चीजों ने हमारी सोच को भ्रमित कर दिया है और विषयनिष्ठक वास्तविकता को हमसे छिपा दिया। परन्तु देकार्त ने यह जोर दिया कि कठोर तार्किक सोच पर निर्भरता भ्रम से मनुष्य को मुक्त कर देती है और विषयनिष्ठ सत्य की खोज करने के लिए हमें सक्षम बनाती हैं।

वैज्ञानिक बुद्धिवाद भी प्राकृतिक विज्ञान में विकास से प्रभावित हुआ। फ्रांसिस बेकन, जो कि 1561 से 1626 के बीच में रहा, को अक्सर आधुनिक विज्ञान का जनक कहा जाता है क्योंकि उसने भौतिक संसार का अध्ययन करने के लिए तर्कसंगत, तार्किक सोच को लागू किया। जिसके प्रभावस्वरूप, बेकन ने व्यवस्थित अनुभवजन्य जाँच-पड़ताल के विचार को बढ़ावा दिया – जिसे हम अक्सर "वैज्ञानिक पद्धति" कह कर पुकारते हैं – जो मानवीय आत्मनिष्ठा को नियंत्रित करती हुई, हमें हमारे चारों ओर के संसार को समझने के लिए विषयनिष्ठक समझ के लिए सक्षम करती है।

वैज्ञानिक बुद्धिवाद इतना ज्यादा प्रभावित था कि सत्रहवीं शताब्दी से बीसवीं सदी के मध्य तक अध्ययन के लगभग हर क्षेत्र में इसके दृष्टिकोण को अपनाया गया। प्रत्येक क्षेत्र जैसे धर्म और धर्मविज्ञान के विषय तर्कसंगत, वैज्ञानिक विश्लेषण के अधीन थे। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, तार्किकता और विज्ञान की अवधारणाएँ सदियों से विभिन्न तरीकों में परिवर्तित हुई हैं। परन्तु विषयनिष्ठतावाद की मौलिक धारणा एक जैसी ही रही है, विशेषकर: तर्कसंगत वैज्ञानिक विश्लेषण का पालन करते हुए, हम विषयनिष्ठक ज्ञान तक पहुँच सकते हैं।

बीसवीं सदी में, आधुनिक विषयनिष्ठतावाद को व्यापक दार्शनिक दृष्टिकोण जिसे संरचनावाद के नाम से जाना जाता है, के माध्यम से चरम पर ले जाया गया। सरल रूप से कहना, विषयनिष्ठतावादियों ने तर्कसंगत और वैज्ञानिक विषयनिष्ठता का उपयोग जो कुछ वे अध्ययन करते हैं, उसकी संपूर्ण समझ को प्राप्त करने के लिए उपयोग करने के प्रयास में किया – जिसमें समाजशास्त्र, कला, भाषा और साहित्य सम्मिलित हैं। उनमें साहित्य की व्याख्या में विषयनिष्ठता की इच्छा इतनी चरम थी कि संरचनावादियों ने हर उस विचार को बाहर कर दिया जो कि किसी तरह से विषयनिष्ठता के तत्व को परिचित कराता था। लेखकों के अभिप्राय, मूल दर्शकों की आवश्यकतायें और आधुनिक पाठकों के विचार को बहुत अधिक तर्कसंगत वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए विषयनिष्ठक समझा गया। परन्तु संरचनावादी इस बात से आश्वस्त थे कि कठोर तर्कसंगत विश्लेषण जिस मूलपाठ की वे व्याख्या करते हैं उसके लिए विषयनिष्ठक समझ को उपलब्ध करा सकता था।

परमेश्वर हमें पूरे लोग के रूप में मिलता है। उसने हमारे प्रत्येक पहलू की रचना की है। इस प्रकार, उसने हमारे मन को बनाया है: उसने हमारे अंतर्ज्ञान को बनाया है। उसने सब कुछ को बनाया है, और वह हमसे चाहता है कि हम उसके प्रति अपने सारे मन और प्राण और सामर्थ्य और हृदय से प्रेम को व्यक्त करें, इसलिए इसमें हमारा प्रत्येक पहलू सम्मिलित होता है। इसलिए एक संकीर्ण बुद्धिजीवी के रूप में बाइबल को पढ़ना पर्याप्त नहीं है और संकीर्ण भावनात्मक या सहज ज्ञान युक्त पढ़ना पर्याप्त नहीं है। आपको जो कुछ आपके अन्दर है उन सब को उपयोग करके प्रतिक्रिया करनी चाहिए। यही परमेश्वर आपसे मांग रहा है। और यह भी सत्य है कि पाप हमारे दोनों अर्थात् हमारे मन और अंतर्ज्ञान को प्रभावित कर सकता है। इसलिए प्रभु ने हमें इनको प्रदान किया है ताकि भावार्थ में हम एक को दूसरे के साथ ठीक करना आरम्भ कर दें। ठीक है? इसलिए हो सकता है कि लोग सहज ज्ञान से कुछ विचार करने के लिए झुके हुए हों और वे पवित्रशास्त्र को पढ़े हों और वे ऐसा कहें, "ईमानदारी से, जब मैं इस पर अपने मन को उपयोग करता हूँ, तो मैं देखता हूँ कि मेरे अंतर्ज्ञान को सुधार की आवश्यकता है।" और ऐसा ही विपरीत क्रम से है, ठीक है? यही कारण है कि मेरे पास बौद्धिक विचार हैं और मुझे यह कहने की आवश्यकता है कि यह उससे बड़े हैं। और सहज ज्ञान युक्त भावना मुझे चेतावनी देती है कि, क्या तुम जानते हो, कदाचित् आपके लिए उत्तम होगा कि आप इस विचार से दूर रहें क्योंकि यह बाइबल आधारित नहीं है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

-डॉ वर्न पोईथरस

अर्थ के लिए विषयनिष्ठक पद्धतियों की दार्शनिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देख लेने के बाद, आइए अब हमारे ध्यान को बाइबल की व्याख्या पर विषयनिष्ठक पद्धतियों के कारण पड़ने वाले प्रभाव पर केन्द्रित करने के लिए मुड़ें।

प्रभाव

तर्कसंगत वैज्ञानिक विषयनिष्ठतावाद ने बाइबल की व्याख्या को दो मौलिक तरीकों से प्रभावित किया है। सबसे पहले, इसने हमारा मार्गदर्शन जिसे हम बाइबल का आलोचनात्मक अध्ययन कहते हैं, की ओर किया है। और दूसरा, इसने इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी बाइबल अध्ययन को भी प्रभावित किया है।

आलोचनात्मक विद्वान सामान्य तौर यह तर्क देते हैं कि पवित्रशास्त्र को मूल्यांकन करने का सबसे उत्तम साधन तर्कसंगत जाँच-पड़ताल करने से है, जैसे कि वे जिनके द्वारा विज्ञान, पुरातत्व विज्ञान और इतिहास को उपयोग किया गया है। दुर्भाग्य से, आलोचनात्मक विद्वान अक्सर जाँच-पड़ताल के इन तरीकों की सीमाओं को पहचानने में असमर्थ होते हैं, इसलिए, वे पवित्रशास्त्र के दावों और शिक्षाओं को स्वीकार करने से इन्कार कर देते हैं।

आलोचनात्मक विद्वानों के विपरीत, इवैन्जेलिकल इस बात पर जोर देते हैं कि पवित्रशास्त्र पूरी तरह से सत्य और, और सारे के सारे वैज्ञानिक निष्कर्षों को अंततोगत्वा इसकी शिक्षाओं के अधीन होना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम बाइबल के बारे में महत्वपूर्ण बातों को विज्ञान, पुरातत्व विज्ञान और इतिहास से नहीं सीख सकते हैं। बाइबल के अधिकार अधीनता में होने, और उचित तरीके से सही उपयोग करने पर तर्क और वैज्ञानिक बाइबल के अर्थ को प्राप्त करने के लिए उपयोगी औजार हो सकते हैं। और इन विषयों से प्राप्त आत्मबोध अक्सर पवित्रशास्त्र के उन पहलूओं को समझने में सहायता करता है जो कि वैज्ञानिक, पुरातात्विक और ऐतिहासिक जानकारी सम्बन्धित होते हैं। परन्तु इन विषयों का उपयोग पवित्रशास्त्र के दावों और शिक्षाओं का अस्वीकार करने के लिए उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

> **हर कोई जो बाइबल को पढ़ता और इसका अध्ययन करता है, के पास कोई न कोई व्याख्या का तरीका है। यह एक ऐसा प्रश्न है कि क्या हम वास्तव में किसी ऐसे तरीके के प्रति जागरूक हैं या नहीं जिसे हम उपयोग कर रहे हों और उस प्रश्न के बारे में सावधानी से सोचते हों जिसे हम पवित्रशास्त्र के बारे में पूछ रहे हैं और कैसे हम इसके उत्तरों को प्राप्त कर सकते हैं। मैं वास्तव में लोगों को प्रोत्साहित करता हूँ जिन्होंने अभी अभी बाइबल का अध्ययन करना और बाइबल को किसी नियमित कदम-दर-कदम तरीके के द्वारा, उसका पालन करते हुए समझना आरम्भ किया है, जिन प्रश्नों को वे प्रत्येक संदर्भ के बारे में पूछते हैं, जिसका वे अध्ययन करते हैं। परन्तु यह कहना महत्वपूर्ण है कि बाइबल की व्याख्या कोई विज्ञान नहीं है; अपितु यह एक कला है। और ऐसा नहीं है कि मानो हमने बिल्कुल सही प्रश्नों को किया हो, हम सदैव बाइबल के मूलपाठ के पूर्ण अर्थ को समझ सकते हैं। और इसलिए, मैं सोचता हूँ कि समय के व्यतीत होने के साथ, हम न केवल ज्यों का त्यों एक तरीके के विषय में सीखते हैं परन्तु यहाँ तक कि पवित्रशास्त्र के किसी भी विशेष संदर्भ की व्याख्या में पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के लिए खुल जाते हैं।**
>
> **-डॉ फिलिप्प रेयकेन**

> **जब हम बाइबल की व्याख्या में श्रमसाध्य पद्धतिविज्ञान को काम में लाते हैं, तो यह एक लाभ की बात होती है क्योंकि इसमें यह हमें ईमानदार बनाए रखती है। यह जब हम पवित्रशास्त्र के पास जाते तो हमें या तो लापरवाही या फिर ठीक से कम सूचित किए जाने से बचाती है... आप जानते हैं कि, एक अच्छा पद्धतीय आधार हमें हमारे गृहकार्य करने के लिए संचालित करता है, और यह हममें परिश्रम और ध्यान को बढ़ावा देता है। ठीक उसी समय, पद्धतीय कठोरता हमें ऐसे समय की ओर ले जा सकती है जहाँ वह बाइबल आधारित लोगों को जो कुछ वे कहना चाहते हैं, कुछ न कहने दे। यह लघुकारक व्याख्याओं को जन्म दे सकती है। यूहन्ना 13 मेरे पसंदीदा उदाहरणों में से एक है, जो कि पैरों को धोने की कहानी है। यदि आप यहाँ तक विवेचनात्मक पद्धितविज्ञान के दृष्टिकोण से पहुँचते हैं जिसे हममें से बहुतों ने अभी तक सीखा है, तो यह यूहन्ना 13 से आसानी से दूर होते हुए इस दृढ़ विश्वास पर पहुँचना है कि यह सेवकपन के ऊपर केवलमात्र एक अध्याय है। परन्तु जितना ज्यादा मैं इस संदर्भ के ऊपर यूहन्ना और पूर्ण रूप से**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मापदण्ड की सीमा में विस्तृत रूप से समटते हुए ध्यान केन्द्रित करता हूँ, उतना अधिक मैं आश्वस्त होता हूँ कि यूहन्ना सच्चाई में उसी कहानी की नाटकीयता का रूपांतरण है जिसे पौलुस ने फिलिप्पियों 2 में प्रस्तुत किया है, जहाँ पर वह यह कहता है कि, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया... और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली... इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।" हमारे पास इन दोनों संदर्भों में पहले की महिमा, स्वयं को शून्य करना और सेवकाई, और तब परिणामस्वरूप पुन:आगमन, परिणामस्वरूप ऊँचे पर उठाये जाने की कहानी का रूपान्तरण मिलता है। यह बिल्कुल वैसे ही है जिसे पैलीकेन विद्वान पूर्वअस्तित्व, केनोसिस और ऊँचे पर उठाए जाने के ख्रिष्टीयविज्ञान के बारे में बात कर रहा है। और यहाँ पर यूहन्ना में प्रासंगिक सुराग मिलते हैं जो हमें वहाँ तक ले जाते हैं, वे समझने के लिए बहुत ही जटिल हैं। और इसलिए, मैं यह सोचता हूँ कि यह महत्वपूर्ण है कि जब हम बाइबल के पास आते हैं तो हमें सदैव अपने ध्यान में रखना चाहिए कि अन्त तक पहुँचने के लिए पद्धतिविज्ञान ही एक साधन मात्र है। यह स्वयं में अन्त नहीं है, और इसलिए लक्ष्य पवित्रशास्त्र को सही तरीके से समझना है। यही सदैव उद्देश्य होना चाहिए।

-डॉ कैरी विन्जान्ट

अर्थ के लिए विषयनिष्ठक पद्धतियाँ हमें कई तरीकों से सहायता कर सकती हैं। उनके पास तर्क और व्याख्या के उचित तरीकों से लाभ प्राप्त किया जा सकता है जो कि हमें बाइबल की व्याख्या को सावधानी और दायित्वपूर्ण तरीके से करने के लिए सहायता कर सकती हैं। परन्तु बाइबल की व्याख्या के लिए यह पद्धति जितना ज्यादा मूल्यवान हो सकती है, हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि अंततोगत्वा केवल परमेश्वर ही उसके ज्ञान का विषय है क्योंकि कोई भी बात उसकी आँखों से छिपी हुई नहीं है। हम चाहे जितना भी ज्यादा प्रयास क्यों न करें, मानवीय प्राणी कभी भी पूरी तरह से विषयों की, पूरी तरह से तथ्यों की निष्पक्ष जाँच-पड़ताल नहीं कर सकता है। इसलिए, विषयनिष्ठक पद्धति के लाभ से निगाहों को हटाए बिना, हमें पवित्रशास्त्र की खोज में जो कुछ भी सम्मिलित है उसके लिए एक व्यापक समझ की आवश्यकता है।

विषयनिष्ठक पद्धतियों की समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए हम अपने ध्यान को आत्मनिष्ठक पद्धतियों की ओर लगाएँ।

आत्मनिष्ठक

आत्मनिष्ठतावाद के कई विभिन्न प्रकार हैं। परन्तु सामान्य रूप से, हम यह कह सकते हैं कि आत्मनिष्ठतावाद यह पहचान लेता है कि मानवीय प्राणी और संसार, और विशेषकर विश्वास के विषय, अक्सर वैज्ञानिक बुद्धिवाद के द्वारा समझने के लिए बहुत अधिक जटिल हैं। इसलिए, अर्थ के लिए उनकी खोज विशेष रूप से अंतर्ज्ञान और भावनाओं की तरह व्यक्तिगत संकायों पर दृढ़ता से निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 13:34-35 में, यीशु ने एक सुपरिचित निर्देश दिया:

मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो (यूहन्ना 13:34-35)।

एक स्तर पर, यीशु का आदेश अपेक्षाकृत स्पष्ट है: हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। परन्तु विभिन्न तरह के लोगों के पास प्रेम क्या है, के लिए विभिन्न तरह के विचार हैं।

हो सकता है कि एक विषयनिष्ठतावादी पूरे पवित्रशास्त्र को देखे कि प्रेम क्या होता है। परन्तु एक आत्मनिष्ठतावादी हो सकता है कि प्रेम की परिभाषा को अपने स्वयं के शब्दों में देने का झुकाव रखता है, और फिर उस परिभाषा के अनुरूप कार्य करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अर्थ के लिए हमारी आत्मनिष्ठतावादी पद्धतियों का विचार विमर्श हमारी विषयनिष्ठतावादी पद्धतियों के जैसा ही होगा। सबसे पहले, हम आत्मनिष्ठतावादी पद्धतियों की दार्शनिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को स्पर्श करेंगे। और दूसरा, हम बाइबल की व्याख्या पर इनके कुछ प्रभावों का उल्लेख करेंगे। आइए व्याख्या के लिए आत्मनिष्ठतावादी पद्धतियों की पृष्ठभूमि से आरम्भ करें।

पृष्ठभूमि

आधुनिक आत्मनिष्ठतावाद ने ज्ञानोदय की सत्रहवीं और अठारहवीं सदी के विषयनिष्ठतावाद की प्रतिक्रिया में आंशिक रूप से प्रसिद्धि प्राप्त की थी। दार्शनिकों जैसे डेविड ह्यूम, जो कि स्कॉटिश संदेहवादी थे जो 1711 से लेकर 1776 के बीच में रहे, ने यह बहस किया है कि तर्क और वैज्ञानिक अध्ययन हमें इस संसार के विषयनिष्ठक ज्ञान तक मार्गदर्शन नहीं दे सकता है। ह्यूम और अन्यों ने यह विश्वास किया कि हमारी भावनाएँ, इच्छाएँ और मानसिक श्रेणियाँ सदैव हमारी सोच को प्रभावित करते हुए, निष्पक्ष विषयनिष्ठता असम्भव बना देती हैं।

जर्मन दार्शनिक इम्मानुएल कान्त, जो कि 1724 से लेकर 1804 के बीच में रहे, ने भी आत्मनिष्ठक विचारों के ऊपर अपना जबरदस्त योगदान दिया है। कान्त ने यह बहस किया कि हम विषयनिष्ठक वास्तविकता को जैसी वह वास्तव में है, वैसी नहीं जान सकते हैं: हम कभी भी *डिंग ऐन सिच* या "एक वस्तु स्वयं में" को नहीं जान सकते हैं। उसने विश्वास किया कि हम संसार का केवल वैसा अनुभव करते हैं जैसा वह प्रगट होता है और फिर अपने अनुभवों को तर्कसंगत श्रेणियों या धारणाओं की प्रक्रिया में से जाने देते हैं जो कि पहले से ही हमारे मन में विद्यमान हैं। कान्त ने निष्कर्ष निकाला कि हम सामान्य तौर पर जिसे "इस संसार का ज्ञान" कह कर पुकारते हैं वह सदैव दोनों अर्थात् हमारी अनुभवजन्य धारणाओं और हमारी मानसिक वैचारिकता को अपने में सम्मिलित करता है।

ह्यूम और कान्त के बाद, अर्थ के लिए आत्मनिष्ठक पद्धति निरन्तर बीसवीं सदी के मध्यहान् छायावाद जैसे आन्दोलनों में विकसित होती रही। छायावादी और वे जिन्होंने उनका अनुसरण किया ने यह बहस किया कि अर्थपूर्ण कविता, नाटक, संगीत और दृश्य कला वास्तविकता की एक समझ को प्रदान करता है जो कि तर्कसंगत, वैज्ञानिक प्रवचन से अत्याधिक उत्तम हो सकता है। उन्होंने यह भी जोर दिया कि बुद्धिवाद के अमानुषिक प्रभाव हैं क्योंकि यह मानवीय गुणों जैसे अन्तर्ज्ञान और भावना को मूल्यहीन कर देता है। और इसलिए, उन्होंने यह जोर दिया कि व्याख्याकारों को उनके स्वयं के व्यक्तिगत् मानवीय गुणों के ऊपर जब वे मूलपाठों की व्याख्या करते हैं, तो निर्भर करना चाहिए।

अर्थ के लिए आत्मनिष्ठक पद्धतियाँ एक बार फिर से बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में एक जाने पहचाने आन्दोलन उत्तरकालीन-संरचनावाद में स्थानान्तरित हुई। फ्रेंच सिद्धान्तकारों जीन फ्रेंकोइस ल्योटार्ड, जैक्ऊस डेरिडा, मिशेल फूकाल्टो और कई अन्यों ने बीसवीं सदी के संरचनावाद की विषयनिष्ठता को अस्वीकार कर दिया। सच्चाई तो यह है कि, अधिकांश विषयनिष्ठता से इतनी दूर चले गए कि उन्होंने विषयनिष्ठता की सारी आशा को ही अस्वीकार कर दिया। उन्होंने यह जोर दिया कि ज्ञान के विषयनिष्ठक दावों पर इसलिए भरोसा नहीं किया जा सकता है क्योंकि वे आत्मनिष्ठक पूर्वाग्रहों, भावनाओं और विद्यमान मान्यताओं के द्वारा बहुत ज्यादा प्रभावित और बहुत ज्यादा सीमित हैं।

इसके अलावा, कई उत्तरकालीन-संरचनावादी उन्नीसवीं सदी के जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक नीत्शे के साथ, और बीसवीं सदी के अस्तित्ववादियों में से कुछ के साथ सहमत होते हैं, जो यह कहते हैं कि ज्ञान के सारे दावे मौलिक रूप से एक व्यक्ति या समूह के पूर्वाग्रहों को अन्यों के ऊपर थोपने का प्रयास है। उनमें से कुछ ने तो इस विचार का विस्तार कला और साहित्य तक यह बहस करते हुए कर दिया है कि यहाँ तक कि कलात्मक व्याख्या शक्ति-को-प्रगट करने का खेल है जिसे सामाजिक प्रभुत्व को प्राप्त करने के लिए रूपरेखित किया गया है।

हमारे दिनों में, आत्मनिष्ठावाद विशेष कर साहित्य और कला की व्याख्या में व्यापक रूप से फैल गया है। आत्मनिष्ठावादी व्याख्याकार यह बहस करते हैं कि क्योंकि हम हमारे चारों ओर के संसार की विषयनिष्ठक समझ को खोज नहीं सकते हैं, इसलिए कला और साहित्य, जिसमें बाइबल भी सम्मिलित है, का अर्थ इसके भीतर ही स्थित होना चाहिए। इसलिए, कला और साहित्य के विषयनिष्ठक अर्थ को बोलने की बजाए, आत्मनिष्ठतावादी संगीत, चित्रकला, पुस्तकें और इसी तरह की अन्य बातों के बारे में बात करते हैं जो कि विभिन्न संस्कृतियों में,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विभिन्न जातीय समूहों में, विभिन्न आर्थिक वर्गों में, विभिन्न लिंगों के द्वारा और ऐसा ही अन्य समूहों द्वारा विभिन्न दृष्टिकोण से देखा जाता है। और वे विशेष रूप से इस बात में रूचि रखते हैं कि कैसे यह विभिन्न समूह कला और साहित्य को उनके विभिन्न सामाजिक कार्यसूची में उपयोग करते हैं।

अब क्योंकि हमने अर्थ के लिए आत्मनिष्ठक पद्धति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण कर लिया है, इसलिए अब हम बाइबल की व्याख्या पर इसके प्रभाव के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने के लिए तैयार हैं।

प्रभाव

आदर्श रूप से, मसीह के अनुयायी उनके चारों ओर की संस्कृति के प्रवाह के प्रभाव को उनके बाइबल की व्याख्या करने के तरीके के ऊपर प्रभावी होने की अनुमति नहीं देते हैं। परन्तु वास्तव में, हममें से कोई भी पूरी तरह से बाइबल के व्याख्याशास्त्र के प्रति हमारी पद्धति के ऊपर संस्कृति के प्रभाव से नहीं बच सकते हैं। हाल के दशकों में, व्याख्याशास्त्र आत्मनिष्ठतावाद शैक्षणिक विचार विमर्शों की सीमाओं से बहुत आगे की ओर निकल गया है और यह इतना ज्यादा सामान्य बन गया है कि हम ज्यादा से ज्यादा लोगों के पास चले जाते हैं जो यह जोर देते हैं कि सच्चाई के दावे वास्तव में व्यक्तिगत् आत्मनिष्ठक विचारों से ज्यादा कुछ भी नहीं है। और यह विशेष रूप से विश्वास और बाइबल के विषयों में सत्य हैं। इसी कारण से, हमें सभों को आत्मनिष्ठतावाद के उस तरीके से बहुत ज्यादा जागरूक होने की आवश्यकता है, जिसमें इसने हमारे दिनों में बाइबल आधारित व्याख्या को प्रभावित कर दिया है।

तर्कसंगत वैज्ञानिक विषयनिष्ठतावाद की तरह ही, आत्मनिष्ठतावाद ने दोनों अर्थात् आलोचनात्मक बाइबल आधारित अध्ययन और इवैन्जेलिकल बाइबल आधारित अध्ययन को प्रभावित किया है। आलोचनात्मक बाइबल आधारित जो विद्वान आत्मनिष्ठतावाद से प्रभावित हुए हैं वे अक्सर यह बहस करते हैं कि बाइबल के मूलपाठ में कोई भी विषयनिष्ठक अर्थ नहीं पाया जाता है। इसलिए, अपने विद्यार्थियों को पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ की खोज करने के बजाए, वे बाइबल के पाठकों को उत्साहित करते हैं कि वे पवित्रशास्त्र को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग करके इसमें स्वयं निर्मित अर्थों को उत्पन्न करें। उनमें से कुछ तो यहाँ तक बहस करते हैं कि यह बिल्कुल सटीक रूप से नए नियम के लेखकों ने किया जब वे पुराने नियम की व्याख्या कर रहे थे। वे विश्वास करते हैं कि नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के मूलपाठ विषयनिष्ठक भाव में क्या अर्थ रखते हैं, की कोई परवाह नहीं की है, और नए नियम के लेखक मुख्य रूप से इस बात की चिंता में थे कि कैसे पुराने नियम को उनके मसीही विश्वास की मान्यताओं को बढ़ावा देने के लिए उपयोग किया जा सकता है। और आलोचनात्मक आत्मनिष्ठतावादी व्याख्याकार यह बहस करते हैं कि हमें भी ऐसा ही करना चाहिए – कि हमें पवित्रशास्त्र के विषयनिष्ठक अर्थ की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए, और यह कि हमें बाइबल का उपयोग हमारे स्वयं की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक कार्यसूचियों को बढ़ावा देने के लिए उपयोग करना चाहिए।

आलोचनात्मक बाइबल आधारित अध्ययन के विपरीत, इवैन्जेलिकल बाइबल अध्ययन ने अधिकांशतया चरम आत्मनिष्ठक दृष्टिकोणों को अस्वीकार किया है। कम से कम सैद्धान्तिक रूप में, इवैन्जेलिकल सामान्य रूप से यह स्वीकार करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, और इसलिए यह कि इसका अर्थ व्याख्याकारों की बजाए परमेश्वर की ओर निर्धारित किया जाना चाहिए। परन्तु इवैन्जेलिकल व्याख्याशास्त्र पर पड़ने वाले नकारात्मक आत्मनिष्ठक प्रभाव के प्रतिरोधक नहीं हैं। वे अक्सर संदर्भ के विषयनिष्ठक अर्थ के ऊपर बिना किसी सोच के यह पूछते हैं कि, "इस मूलपाठ का आपके लिए क्या अर्थ है?" और प्रचारक बाइबल के शिक्षक निरन्तर बाइबल के संदर्भों को उनकी समकालीन लाभों में, मूलपाठ की ऐतिहासिक संरचना की चिंता न करते हुए पढ़ते चले जाते हैं।

परन्तु इस तरह की त्रुटियों के बाद भी, आत्मनिष्ठतावाद ने फिर भी इवैन्जेलिकल बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र के लिए बहुमूल्य योगदान दिया है। यह कहना उचित है कि हमारी सांस्कृतिक और व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, कौशल, योग्यता, कमजोरियाँ और सीमाएँ पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी समझ को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। और यह हमारी यह देखने में सहायता करती है कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को लिखने के लिए मानवीय लेखकों के आत्मनिष्ठक दृष्टिकोणों को प्रेरित किया, उसने हमारी स्वयं के आत्मनिष्ठक दृष्टिकोणों को हमारे अपने दिनों में पवित्रशास्त्र के अर्थ को लागू करने और इसे समझने में हमारी सहायता करने के लिए उपयोग किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

बाइबल सदैव हमें एक व्यक्तिगत् प्रतिक्रिया के लिए मजबूर करती है। बाइबल सदैव हमें विश्वास करने के लिए प्रतिज्ञायें, चेतावनियाँ पालन करने के लिए, आज्ञाएँ आज्ञापालन करने के लिए देती है। और इसलिए सदैव वहाँ पर परमेश्वर के वचन के प्रति व्यक्तिगत् प्रतिक्रिया का एक तत्व विद्यमान है जिसकी वास्तव में बुलाहट दी गई है। परमेश्वर स्वयं उसके वचन के द्वारा बोल रहा है। परन्तु मैं सोचता हूँ कि यह स्वीकार करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि यह वह स्थान नहीं है जहाँ से हम बाइबल की व्याख्या आरम्भ करते हैं, मानो सबसे पहला, सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि, "यह संदर्भ मुझे क्या अहसास कराता है?" या "इस संदर्भ के प्रति मेरी व्यक्तिगत् प्रतिक्रिया क्या है?" हमें यह समझने की आवश्यकता है कि बाइबल अपने मौलिक संदर्भ में क्या अर्थ रखती है इससे पहले कि हम इसके पूरे अर्थ को प्राप्त कर सकें कि बाइबल के पास हमारी समकालीन परिस्थिति के लिए क्या है। और इसलिए बाइबल अपने आप में और स्वयं में क्या अर्थ रखती है, को समझने के लिए कठोर श्रमसाध्य करना अति महत्वपूर्ण है और फिर वहाँ पर नहीं रूक जाना है क्योंकि हम व्यक्तिगत् प्रतिक्रिया तक जाना चाहते हैं। परन्तु बाइबल की व्याख्या की प्रक्रिया में वे दोनों ही अति महत्वपूर्ण हैं।

-डॉ फिलिप्प रेयकेन

अर्थ के लिए आत्मनिष्ठक पद्धतियाँ नुकसानदायी भी हो सकती हैं जब वे हमें बाइबल की विभिन्न व्याख्याओं के मूल्याकंन के लिए किसी भी मानक पर नहीं छोड़ती हैं। साधारण तथ्य यह है कि पवित्रशास्त्र की कुछ व्याख्यायें अन्यों से ज्यादा उत्तम होती हैं। परन्तु बाइबल की व्याख्या की विषयनिष्ठक पद्धतियाँ हमारी आँखों को इस तरह से खोल सकती हैं कि जिसमें हमारी पृष्ठभूमियाँ, और व्यक्तित्व, यहाँ तक हमारा सहज ज्ञान और हमारी भावनायें अक्सर पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या को प्रभावित करते हैं। और इन प्रभावों की पहचान और ज्यादा प्रभावशाली तरीके से इनका प्रवन्धन करने में हमारी सहायता करती है ताकि जब हम बाइबल की व्याख्या करें तो और ज्यादा दायित्वपूर्ण तरीके से करें।

अब क्योंकि हमने अर्थ के लिए विषयनिष्ठक और आत्मनिष्ठक पद्धतियों की खोज कर ली है, इसलिए आइए हम हमारे ध्यान को संवादात्मक पद्धतियों की ओर लगायें।

संवादात्मक

किसी एक समय या किसी अन्य समय पर, हम सभों ने ऐसे लोगों के साथ मुलाकात की है जिनकी किसी वस्तु के बारे में मजबूत विचार होंगे कि वे इस बात पर जोर देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति उनके साथ पूरी तरह सहमत होना चाहिए। अब, अधिकतर समय हम शान्ति को बनाए रखने के लिए उनके साथ सहमत हो जाते हैं। परन्तु अन्य समयों पर जब एक मुद्दा जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, हमारे पास होता है, जिसके बारे में हम बात करते रहने का हठ करते हैं। इस तरह के एक अच्छे वार्तालाप में, दोनों अर्थात् लोग स्वयं को स्पष्ट रीति से प्रगट करने के लिए अपना पूरा प्रयास करते हैं और दूसरों को सावधानी से सुनते हैं। और आशा की जाती है कि, जब वार्तालाप निरन्तर चलता रहता है, तो कुछ मात्रा में आम सहमति के लिए उपाय निकल आते हैं। ठीक है, हाल ही के दशकों में, इस तरह के वार्तालाप या संवाद सभी तरह के साहित्य की व्याख्या, जिसमें बाइबल भी सम्मिलित है, के लिए एक आदर्श बन गया है।

शब्द "संवादात्मक" एक ऐसे विचार की ओर संकेत करता है जिसमें व्याख्या में एक तरह का संवाद या विचार विमर्श मूलपाठ और पाठकों के मध्य में सम्मिलित होता है। मुख्य विचार यह है कि मूलपाठ के पास एक विषयनिष्ठक अर्थ है, परन्तु यह कि इस विषयनिष्ठक अर्थ की सबसे उत्तम खोज मूलपाठ और पाठकों के मध्य आत्मनिष्ठक वार्तालाप या संवाद के माध्यम से होती है। हम इस तरह का एक संवाद भजन संहिता 119:18 में देखते हैं, जहाँ पर भजनकार ने परमेश्वर से इस तरह का अनुरोध किया है:

मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ (भजन संहिता 119:18)।

इस भजन में, भजनकार उस तरीके के बारे में बात कर रहा है जिसमें वह नियमित रूप से पवित्रशास्त्र के ऊपर मनन करता है। और उसने व्याख्या के लिए मौलिक संवादात्मक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति किया है। सबसे पहले, वह यह विश्वास करता है कि विषयनिष्ठक अर्थ व्यवस्था में भी पाया जा सकता है। परन्तु उसी समय, वह यह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

समझ जाता है कि उसे आत्मनिष्ठक, आखों-को-खोलने वाले अनुभव की आवश्यकता व्यवस्था को ठीक रीति से समझने के लिए चाहिए।

भजनकार परमेश्वर से आत्मनिष्ठक प्रभावों को समाप्त कर देने के लिए नहीं, परन्तु अपने सहज बोध में वृद्धि के द्वारा आत्मनिष्ठक दृष्टिकोण को सुधारने के लिए कह रहा था। और जैसा कि इस वचन का व्यापक संदर्भ हमें यह दिखाता है कि, भजनकार निरन्तर उसकी समझ में सुधार के क्रम में व्यवस्था के मूलपाठ की ओर लौटता रहता है: ऐसा वह पवित्रशास्त्र के साथ एक संवाद को बनाए रखने के लिए करता है जो कि निरन्तर उसके अर्थ को सुधारने के लिए है।

अर्थ के लिए हमारी संवादात्मक पद्धतियों की खोज उसी तरह से आरम्भ होगा जैसा कि हमारा ध्यान विषयनिष्ठक और आत्मनिष्ठक पद्धतियों के ऊपर केन्द्रित करने से हुआ था। सबसे पहले, हम संवादात्मक नमूनों की दार्शनिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देखेंगे। और दूसरा, हम इनके प्रभावों के विषयों को बाइबल के व्याख्याशास्त्र के ऊपर विचार करेंगे। परन्तु फिर हम विषयनिष्ठक और आत्मनिष्ठक पद्धतियों को एक तरफ रखते हुए और दूसरी तरफ संवादात्मक पद्धति की बाइबल आधारित समझ की आपस में तुलना करते हुए एक कदम आगे की ओर बढ़ाएंगे। इसलिए आइए संवादात्मक पद्धतियों की पृष्टिभूमि को देखते हुए आरम्भ करें।

पृष्ठभूमि

दार्शनिक व्याख्याशास्त्र के क्षेत्र में, व्याख्या की संवादात्मक प्रकृति पर जर्मन दार्शनिक, धर्मशास्त्री और भाषाविद् फ्रेडरिक शलाएरमाकर ने जोर दिया था, जो कि 1768 से लेकर 1834 तक रहा। उसने व्याख्या के सुप्रसिद्ध नमूने जिसे "व्याख्याशास्त्रीय चक्र" पुकारा गया को प्रस्तावित किया, जिसके द्वारा व्याख्याकार मूलपाठ या अन्य जटिल वस्तुओं को समझने का प्रयास करते हैं। यह चक्र उस समय आरम्भ होता है जब हम किसी एक वस्तु अर्थात् विषय के साथ मुठभेड़ करते हैं और इसकी आरम्भिक प्रक्रिया को अपने मन में आरम्भ करते हैं। तब हम फिर पुन: इस विषय की ओर इसके साथ मुठभेड़ करने के लिए लौटते रहते हैं और ज्यादा समझ को प्राप्त करते हैं। शलाएरमाकर के व्याख्याशास्त्रीय चक्र को अक्सर अन्यों के द्वारा व्याख्याशास्त्रीय कुंडली, या व्याख्याकारों और उनके अध्ययन के विषयों के मध्य एक वृताकार आन्दोलन है जो कि प्रगतिशील तरीके से उत्तम से सर्वोत्तम समझ की ओर चलता रहता है।

संवादात्मक नमूने विज्ञान में भी प्रगट हुए हैं। बीसवीं-सदी के विज्ञान के दार्शनिक जैसे थॉमस कुहन, जो कि 1922 से लेकर 1996 तक रहे, ने यह बहस की है कि वैज्ञानिक ज्ञान विषयनिष्ठक वास्तविकता और प्रतिमानों की समझ के बीच हुई पारस्परिक क्रिया के परिणामस्वरूप होते हैं जिन्हें हम वैज्ञानिक जाँच-पड़ताल के पास ले आते हैं। एक प्रतिमान अर्थात् मानदंड की मौलिक अवधारणा यह है कि सभी मान्यतायें आपस में सम्बद्ध हैं। वे एक साथ एक जटिल संरचना में एकत्र रहती हैं, जिनमें से प्रत्येक दूसरे को मजबूत और प्रभावित कर रही होती हैं। जब तक एक नया विश्वास हमारे प्रतिमान को चुनौती नहीं देता है, तब तक इसे अपनाना आसान होता है। परन्तु हम नई मान्यताओं का विरोध करते हैं जो कि हमारे प्रतिमान की सरंचना के लिए खतरा होता है। परन्तु फिर भी, जब हमारे प्रतिमानों के विरोधाभास में पर्याप्त मात्रा में प्रमाण हैं, तो यह हमें परिवर्तन के लिए मजबूर कर देते हैं – कई बार क्रान्तिकारी तरीकों से जो कि हम उन सभी को पुनर्विचार के लिए मजबूर कर सकते हैं, जिसके लिए हम सोचते हैं कि हम जानते हैं। परन्तु परिवर्तन की मात्रा पर ध्यान दिए बिना, एक तरह का संवाद हमारे मानसिक प्रतिमानों और विषयनिष्ठक वास्तविकता के प्रति हमारे अनुभव के मध्य सदैव स्थान ले रहा है, जो कि निरन्तर हमें हमारी प्रत्येक मान्यताओं को अन्यों के आलोक में पुनर्मूल्यांकन करने का कारण बनती है।

कदाचित् बीसवीं सदी में सबसे प्रभावशाली संवादात्मक नमूना हंस-जॉर्ज गॉडामेर का था, जो कि 1900 से 2002 के मध्य रहा। गॉडामेर ने अर्थ के लिए विज्ञान, दर्शन, धर्मविज्ञान, कला और साहित्य में दो क्षितिजों के विलय के संदर्भ में बात की। गॉडामेर की सोच में, एक क्षितिज सब कुछ था जिसे देखा जा सकता था या किसी एक विशेष दृष्टिकोण से समझा जा सकता था। व्याख्याशास्त्र के विषय में, एक क्षितिज ऐसा होगा जो कि मूलपाठ होगा। इसके क्षितिज में मूलपाठ में दिए हुए सारे दृष्टिकोण अभिव्यक्त होंगे, और वैध निष्कर्ष होंगे जिन्हें उन दृष्टिकोणों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य क्षितिज वह होगा जो पाठकों का होगा। इस क्षितिज में उनके सारे दृष्टिकोण,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मान्यतायें, भावनायें, पूर्वाग्रह और ऐसी ही और बातें होंगी। और ये क्षितिज आपस में विलय होंगे जब पाठक मूलपाठ के क्षितिज के पहलूओं में अपने स्वयं के क्षितिज को विलय करना आरम्भ करते हैं। जैसा कि पाठकों ने मूलपाठ से सीखा है, या मूलपाठ से दृष्टिकोणों को अपनाया है, उनके स्वयं के क्षितिज मूलपाठ के क्षितिज से नए तत्वों को प्राप्त करके विस्तार करते जाएंगे।

अब क्योंकि हमने संवादात्मक नमूने की पृष्टिभूमि को देख लिया है, इसलिए आइए हम हमारे ध्यान को बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतंत्र विज्ञान के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव की ओर केन्द्रित करें।

प्रभाव

इस स्थान पर हमारे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, हम हमारे विचार विमर्श को कुछ उन तरीकों के ऊपर केन्द्रित करेंगे जिन्हें इवैन्जेलिकलवादियों ने अर्थ के लिए संवादात्मक पद्धतियों को उन्नत करने के लिए पवित्रशास्त्र की उनकी व्याख्या में उपयोग किया है। विशेषकर, इवैन्जेलिकलवादियों ने यह जोर दिया है कि बाइबल का पठन् एक सामान्य पुस्तक के साथ किए हुए संवाद से भिन्न होता है क्योंकि, अन्य पुस्तकों के विपरीत, बाइबल के पास हमारे ऊपर सम्पूर्ण अधिकार है। इसी कारण से, हम इन विषयों के लिए अधिकार-संवादों के रूप में इवैन्जेलिकल दृष्टिकोणों को बोलेंगे।

एक सामान्य दिन के मध्य, हममें से अधिकांश विभिन्न तरह के लोगों के साथ वार्तालाप करते हैं। और इस तरह की वार्तालाप इसमें सम्मिलित होने वाले लोगों के ऊपर निर्भर करती हुई विभिन्न दिशाओं की ओर बढ़ती है। हम अपने मित्रों के साथ सामान्य रूप से किसी वस्तु के बारे में बात कर रहे हैं जिसे हम सभी समझ जाते हैं, हम एक दूसरे के साथ बराबरी में सम्बन्धित होते हैं। वार्तालाप आगे और पीछे चलती रहती है, और हम सभों को सुनने का प्रयास करते हैं और हम एक दूसरे के दृष्टिकोणों का सम्मान करते हैं। परन्तु जब हम किसी महत्वपूर्ण मुद्दे के लिए संवाद कर रहे होते हैं, जैसे कि हमारा स्वास्थ्य या बच्चों का पालन पोषण, और हम ऐसा उसके साथ करते हैं जिसके पास इसके लिए पहले से ही ज्ञान है या फिर जो हमारी अपेक्षा इसमें विशेषज्ञता रखता है, तो हम वार्तालाप को भिन्न दृष्टिकोण से करने की बुद्धिमानी करते हैं। यद्यपि हम जानते हैं कि वह विशेषज्ञ गलतियाँ करेगा, परन्तु फिर भी हम उन्हें अपनी तरफ से ध्यान से सुनते हैं।

परन्तु अब, कल्पना करें कि आपकी किसी के साथ वार्तालाप चल रही है जिसे आप जानते है कि वह कभी गलती नहीं करता है, कोई ऐसा जो सदैव सही है। तो आप निश्चित ही उस वार्तालाप में आपके प्रश्नों और विचारों को लिए हुए आएंगे, परन्तु आप अपना पूरा प्रयास करेंगे कि जो कुछ वह व्यक्ति आपसे कहता है उसे समझें और उसे स्वीकार करें।

चाहे कुछ भी क्यों न हो, कई तरीकों से, ऐसा ही कुछ बाइबल की व्याख्या के साथ है। हम हमारे प्रश्नों और हमारे विचारों के साथ बाइबल के पास आने से बच नहीं सकते हैं, परन्तु क्योंकि बाइबल अचूक है, क्योंकि यह सदैव सही है, हम इसे समझने और स्वीकार करने के लिए वह सब कुछ करते हैं जो यह हमें कहती है।

बाइबल की व्याख्या करना ऐसा है मानो कि आप किसी सबसे ज्यादा अधिकारिक आकृति के साथ संवाद कर रहे हों जिसकी कदाचित् ही आप कल्पना करें, जो कि स्वयं परमेश्वर है। यह एक संवाद है क्योंकि इसमें एक तरह से "लेने और देने" का वार्तालाप पाठकों और पवित्रशास्त्र के बीच में सम्मिलित है। पाठकों के संवाद की तरफ से, हम सभी बाइबल के पास कई प्रश्नों, विचारों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और व्यक्तिगत् अनुभवों के साथ आते हैं। पवित्रशास्त्र के संवाद की तरफ से, परमेश्वर निरन्तर अपने वचन के माध्यम से बोलता है, कई बार जो कुछ हम विश्वास करते हैं इसकी पुष्टि करता है, कई बार उसे सुधारता है।

मेरी पृष्ठभूमि – मेरे अतीत के अनुभव और ऐसी ही और बातें – मेरे पास होती हैं जब मैं बाइबल को पढ़ता हूँ; मैं स्वाभाविक रूप से इसकी व्याख्या करता हूँ, उन्हीं शब्दों में इनके लिए सोचता हूँ। बात यह है कि जब मैं पवित्रशास्त्र के पास आता हूँ, मैं इसके पास पूरे विवेक के साथ आता हूँ। स्पष्ट है कि यही मुझे पवित्रशास्त्र को सुनने में सक्षम बनाता है, अर्थात् मेरी पृष्ठभूमि और ऐसी ही अन्य बातें। परन्तु मैं पवित्रशास्त्र के प्रति स्वयं को पूरी तरह अधीन करने के अभिप्राय से आता हूँ। मैं पवित्रशास्त्र के सामने विनम्रतापूर्वक आता हूँ। यह ठीक है, क्योंकि यह मुझे मूलपाठ को समझने के लिए योग्य बनाता है परन्तु मैं यह कहते हुए अधीन हो रहा हूँ कि, "ठीक है, क्या मेरी प्रतिक्रिया सही है? क्या जो कुछ मैं सोचता हूँ

कि इसका अर्थ यह है उसके लिए यह इसकी पुष्टि करती है या फिर इसे सुधारती है?" इसलिए मैं निरन्तर मूलपाठ को देखने के लिए इसके पास आ जाता हूँ और इसे देखता हूँ, मूलपाठ को सुनता हूँ, मूलपाठ से प्राप्त करने के लिए ठहरा रहता हूँ, पवित्रशास्त्र से मूलपाठ को समझता हूँ, इसे इसके विस्तृत संदर्भ में देखता हूँ जहाँ पर प्रतिक्रियाओं को, जो कुछ परमेश्वर कह रहा है उसके प्रति पुन:निर्मित किया जाता है, ताकि यह पवित्रशास्त्र के मूलपाठ के अनुरूप हो जाए। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, जितना ज्यादा वे पवित्रशास्त्र के अनुरूप होगीं, उतना ज्यादा पवित्रशास्त्र समझ में आएगा। जितना ज्यादा मैं पवित्रशास्त्र को समझता हूँ, तब उतना ही ज्यादा मैं पवित्रशास्त्र के प्रति मेरी प्रतिक्रिया को लाने के लिए योग्य हो जाऊँगा, और होने दूँगा कि यह पवित्रशास्त्र के द्वारा पुन:निर्मित हो जाए।

- डॉ गैरी कोकरिल

जब हम बाइबल के अधिकार के अधीन हो जाते हैं, तो हमें इससे ज्ञान, शिक्षा, और प्रोत्साहन प्राप्त करने की अपेक्षा करनी चाहिए। हम यह विश्वास करते हैं कि आत्मा उसके विवेक अनुसार, हमें पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को ज्यादा से ज्यादा प्रबोधित करेगा, और हमें इसे हमारे जीवनों में ज्यादा से ज्यादा विश्वासयोग्यता के साथ लागू करने के लिए योग्य करेगा। इसलिए, जितना ज्यादा हम जिम्मेदारी से इसे पढ़ते और इसकी व्याख्या करते हैं, उतना ज्यादा हम हमारी समझ के सुधारे जाने की अपेक्षा कर सकते हैं – और उतना ज्यादा ही हमारे वरदान मजबूत होंगे, हमारी सोच चुनौती पाएगी, हमारी संस्कृति पृष्ठभूमि का मूल्यांकन होगा और हमारे व्यक्तिगत् अनुभवों में परिवर्तन आएगा।

यह हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है कि हम पवित्रशास्त्र के अधिकार के प्रति स्वयं को अधीन कर दें क्योंकि हमारा ऐसा करना परमेश्वर के अधिकार के प्रति हमारी प्रवृत्ति को दर्शाता है। परमेश्वर का वचन होने के नाते, जब हम पवित्रशास्त्र की अधीनता में ऐसा करते और नहीं करते हैं, तो हम परमेश्वर के प्रति हमारी प्रवृत्ति के बारे में कुछ कह रहे हैं। और इसलिए, हम सावधान रहना चाहते हैं कि हम पवित्रशास्त्र के पास इसका न्याय करने के रूप में न आए, परन्तु इसके अधिकार के अधीन, क्योंकि हम ऐसा करने के द्वारा पहले स्थान पर ही परमेश्वर के अधिकार के अधीन आ जाते हैं।

-डॉ रॉबर्ट जी. लिस्टर

अब क्योंकि हमने संवादात्मक प्रतिरूप और उनके प्रभावों की पृष्ठभूमि और बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र के ऊपर इसके प्रभाव पर विचार कर लिया है, इसलिए आइए अर्थ के लिए संवादात्मक पद्धतियों को विषयनिष्ठक और आत्मनिष्ठक पद्धतियों के साथ तुलना करके देखें।

तुलना

अर्थ के लिए विषयनिष्ठक और आत्मनिष्ठक पद्धतियाँ कुछ मौलिक तरीकों से एक दूसरे का विरोध करती हैं, परन्तु उनमें कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण सामान्य बात है। अपने चरमोत्कर्ष पर, दोनों ही प्रतिमान मूलभूत रूप से व्याख्याकारों के अधिकार को बराबर कर देते हैं या यहाँ तक कि बाइबल के अधिकार से भी ज्यादा उच्च कर देते हैं। विषयनिष्ठतावाद में कैसे हमारे तर्कसंगत और विज्ञान आधारित विषयनिष्ठक दृष्टिकोणों की विश्वसनीयता को वास्तविकता से अधिक समझने की प्रवृत्ति है। आत्मनिष्ठतावाद में कैसे हमारे व्यक्तिगत् आत्म बोध और विचार की विश्वसनीयता को वास्तविकता से अधिक समझने की प्रवृत्ति है। परन्तु दोनों ही घटनाओं में परिणाम एक जैसा ही है: हम पवित्रशास्त्र के ऊपर न्याय को साथ लेकर बैठते हैं। इसलिए, यद्यपि यह पद्धतियाँ कुछ उपयोगी अंतर्दृष्टियों को प्रदान करती हैं, एक संवादात्मक प्रतिरूप हमारी स्वयं की कमजोरियों और बाइबल के दिव्य अधिकार के साथ पर्याप्त रूप से निपटने में हमारी सहायता करता है।

इस अध्याय में, हम मुख्य रूप से अर्थ के लिए संवादात्मक पद्धतियों को पूरी तरह से देखने की अपेक्षा इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी सम्मत् अधिकार-संवाद पद्धतियों पर विचार करेंगे। इसलिए, हमारी तुलना पहले अधिकार-संवाद और विषयनिष्ठक प्रतिरूपों के, और फिर दूसरा अधिकार-संवाद और आत्मनिष्ठक प्रतिरूपों के ऊपर केन्द्रित होगी। आइए अधिकार-संवाद और विषयनिष्ठक पद्धतियों से आरम्भ करें।

अधिकार-संवाद और विषयनिष्ठ

विषयनिष्ठक प्रतिरूप की तरह ही, एक अधिकार-संवाद यह स्वीकार करता है कि विषयनिष्ठक सच्चाई को पवित्रशास्त्र के मूलपाठ में से प्राप्त किया जा सकता है। बाइबल हमारे लिए परमेश्वर का वचन और प्रकाशन है, और वह सब जो यह कहता है विषयनिष्ठत्मक रूप से सार्थक और अर्थपूर्ण है। और व्याख्या के तरीके हमें इस प्रकाशन को समझने में तब तक सहायता करते रहते हैं जब तक ये तरीके बाइबल के मानदण्डों के अनुरूप रहते हैं। जैसा कि पौलुस ने 2 तीमुथियुस 2:15 में कहा है कि:

> **अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो (2 तिमुथियुस 2:15)।**

यहाँ, पौलुस ये संकेत देता है कि सत्य के वचन को व्यवहार में लाने का एक उचित तरीका है। और विशेषकर, उसने इस उचित तरीके की तुलना एक मजदूर की मजदूरी से की है। उसके कहने का अर्थ यह था कि बाइबल के पठन में सावधानी से किए गए अध्ययन और जिम्मेदार पद्धतिशास्त्र की आवश्यकता होती है। ये तरीके स्वयं और अपने आप में ही पर्याप्त नहीं हैं। परन्तु ये फिर भी जिम्मेदारी से की गई व्याख्या के लिए एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

जबकि अधिकार-संवाद प्रतिरूप इस सुदृढ़ दृष्टिकोण को व्याख्याशास्त्रीय विषयनिष्ठतावाद के साथ साझा करता है, परन्तु साथ ही यह विषयनिष्ठतावाद की चरम सीमाओं के साथ जुड़े हुए कुछ गंभीर खतरों से भी बचाव करता है। यह हमें इस सोच के खतरे से बचने में सहायता करता है कि हममें से कोई भी जब हम पवित्रशास्त्र तक पहुँचते हैं तो पूरी तरह से विषयनिष्ठक हो सकता है। और इससे भी ज्यादा, एक अधिकार-संवाद पद्धति हमें यह स्मरण रखने में सहायता करती है कि तर्कसंगत और वैज्ञानिक निर्णय सदैव पवित्रशास्त्र के अधिकार की अधीनता में देखे जाने चाहिए।

अधिकार-संवाद पद्धति को विषयनिष्ठक प्रतिरूप के साथ तुलना करके देख लेने के बाद, आइए अब हम अधिकार-संवाद पद्धति और आत्मनिष्ठक प्रतिरूपों के बीत तुलना करने के लिए मुड़ें।

अधिकार-संवाद और आत्मनिष्ठक

बिल्कुल वैसे ही जैसे एक अधिकार-संवाद प्रतिरूप विषयनिष्ठक प्रतिरूपों के जैसा कई तरीकों से दिखाई देता है, उसी तरह से इसमें आत्मनिष्ठक प्रतिरूपों के साथ भी समानताएं हैं। यह स्वीकार करता है कि हम सभी पवित्रशास्त्र के पास उन दृष्टिकोणों और मान्यताओं के साथ आते हैं जो बाइबल के संदर्भ को व्याख्या करने के हमारे तरीके को प्रभावित करता है। इसके भी ज्यादा, यह पवित्रशास्त्र और विषयनिष्टतावाद के साथ सहमत होता है कि जो व्यक्तिगत, आत्मनिष्ठक सहयोग हम व्याख्या के लिए लाते हैं, वे मूल्यवान हैं।

पवित्रशास्त्र निरन्तर जैसे भजन संहिता 119 जैसे आत्मनिष्ठ विचारों के ऊपर जोर देता है, जहाँ पर परमेश्वर की व्यवस्था के ऊपर मनन करने, अपने पूर्ण मन से परमेश्वर की सच्चाई को खोजने, यह देखने के लिए खुली आँखों की मांग करना कि परमेश्वर ने उसके पवित्रशास्त्र में क्या प्रकाशित किया है, बाइबल के पास आनन्द और आज्ञाकारिता के व्यवहार से आने, व्यवस्था को प्रेम करना क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से अच्छा वरदान है, और परमेश्वर के अधिकारिक वचन के साथ हमारे संवाद के कई अन्य आत्मनिष्ठक पहलूओं के साथ पवित्रशास्त्र की आज्ञापालन करने के लिए शपथ लेने के लिए कहा गया है। केवलमात्र एक उदाहरण के तौर पर, भजन संहिता 119:97 को सुनिए:

> **अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूँ! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है (भजन संहिता 119:97)।**

इस वचन में, भजनकार यह संकेत देता है कि उसका परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति व्यक्तिगत् प्रेम ने पवित्रशास्त्र के उसके अध्ययन और समझ को प्रभावित किया है। और उसने पवित्रशास्त्र के ऊपर मनन करने के बारे में लिखा है – जो कि एक आत्मनिष्ठक अभ्यास है जो कठोर पद्धतिशास्त्र का हिस्सा नहीं है – जो यह संकेत देता है कि उसने व्यक्तिगत् तौर पर बाइबल के वचन के ऊपर चिन्तन किया है और कदाचित् हो सकता है कि उसने उसे प्रबोधित करने के लिए पवित्र आत्मा का इन्तजार किया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परन्तु यद्यपि एक अधिकार-संवाद पद्धति इस तरह की समानताओं को आत्मनिष्ठक प्रतिरूपों के साथ साझा करती होगी, परन्तु यह फिर भी कई तरह से उनसे भिन्न है। उदाहरण के लिए, कुछ आत्मनिष्ठतावादियों के विपरीत, अधिकार-संवाद प्रतिरूप चेतावनी देता है कि यदि हम हमारी आत्मनिष्ठता को पवित्रशास्त्र के अधिकार के अधीन न करें, तो बाइबल की हमारी व्याख्याओं में गंभीर बाधायें आ जाएंगी। और इसकी स्वयं पवित्रशास्त्र के द्वारा पुष्टि 2 पतरस 3:16 जैसे स्थानों में की गई है, जहाँ पतरस पौलुस के लेखों के बारे में इस तरह से कहता है:

> **वैसे ही उस ने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी है, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाईं खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं (2 पतरस 3:16)।**

पतरस स्वीकार करता है कि पौलुस की पत्रियों में से कुछ बातों को "समझना कठिन" है। परन्तु साथ ही वह यह भी कहता है कि कुछ पाठक उन मुश्किल बातों को समझने के लिए इनके ऊपर कार्य करने में असफल हो जाते हैं क्योंकि उनमें अज्ञान और आध्यात्मिक अस्थिरता है। और इन आत्मनिष्ठक असफलताओं के परिणामस्वरूप, वे बिना किसी अधीनता के पठन करते हैं, और पौलुस के लेखों के अर्थ को विकृत कर देते हैं।

जैसा हमारा अधिकार-संवाद प्रतिरूप संकेत देता है, बाइबल की जाँच-पड़ताल करना एक आजीवन चलती रहने वाली प्रक्रिया है जिसमें पवित्रशास्त्र हमें परिवर्तित करता है और हम को मसीही विश्वास में परिपक्व और विकसित करता है। जब हम परिपक्व – उत्तरदायी तरीके से बाइबल आधारित व्याख्या के तरीकों को उपयोग करते हैं – तो अधिकार-संवाद प्रतिरूप बाइबल के प्रति हमारी विषयनिष्ठक समझ को तेजी से उन्नत करेगा। इसके परिणामस्वरूप, यह आगे की ओर व्यक्तिगत्, आत्मनिष्ठक वृद्धि को उत्पन्न करेगा, और यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहेगी। इस तरीके से, बाइबल के साथ हमारे संवाद के लिए ऐसा सोचा जा सकता है कि जैसे कि यह वृताकार हो जो कि निरन्तर अधिकारिक मूलपाठ और पाठकों के बीच में वृतीय चक्र को दुहराता रहता है। इस वृत में सम्मिलित होने का हमारा लक्ष्य बाइबल के मूलपाठ के अर्थ के ज्यादा निकट और ज्यादा निकट होना है। यदि सब कुछ ठीक ठीक चलता रहता है, तो जितना ज्यादा यह वृत चक्र लेता है, उतना ज्यादा कसाव इसमें आते हुए, यह पवित्रशास्त्र के मूलपाठ के सही अर्थ पर आ रूकेगा।

और इस संवाद को क्या सफल बनाता है? जैसा कि हमने उल्लेख किया है, इसमें निश्चित ही हमारी ओर से कठोर मेहनत की आवश्यकता होती है। परन्तु हमारे प्रयास उस समय व्यर्थ हो जाएंगे यदि परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें पवित्रशास्त्र को उपयोग को लागू करने और बड़ी समझ की ओर चालित नहीं करता है। आत्मा के कार्य के कारण, हम यह आशा कर सकते हैं कि जब हम गंभीरता से स्वयं को उसके और उसके वचन के अधीन करते हैं, तो बाइबल की व्याख्या करने की हमारी योग्यता में वृद्धि होगी।

> **आप बाइबल के पास सांसारिक दृष्टिकोण और परिकल्पनाओं के साथ पहुँचते हैं – कि इसे कैसे समझा जाए – परन्तु यदि आप निरन्तर मूलपाठ के साथ प्रार्थनापूर्वक सम्पर्क करते रहें, तब मूलपाठ आपको उस वृत की निकटता में आने के लिए और वास्तविक मूलपाठ की गूढ़ समझ के लिए मार्गदर्शन देगा। इसलिए कहानी यह है, या वहाँ पर बात यह है कि, जितना ज्यादा आप मूलपाठ के साथ ही प्रार्थनापूर्वक सम्पर्क करते हैं, उतना ज्यादा मूलपाठ आपके अपने दृष्टिकोण और समझ को प्रभावित करेगा, और आप उस मूलपाठ में जीवित परमेश्वर की वास्तविक समझ के अर्थ के निकट आ जाएंगे।**
>
> **-डॉ पी. जे. बाईस**

सारांश

इस अध्याय में, हमने अर्थ के लिए विभिन्न पद्धतियों का सर्वेक्षण किया है जिन्हें व्याख्याकारों ने सदियों में उपयोग किया है। हमने विषयनिष्ठक पद्धतियों को देखा जिनमें अर्थ को केवलमात्र पवित्रशास्त्र स्वयं में से ही पता लगाने की प्रवृति है, आत्मनिष्ठक पद्धतियाँ में पवित्रशास्त्र के अर्थ को उसके पाठकों के दृष्टिकोणों से प्राप्त करने की प्रवृति है, और संवादात्मक पद्धतियों में – विशेषकर अधिकार-संवाद पद्धति में, जो यह कहती है कि पाठक अधिकारिक बाइबल मूलपाठ के साथ सम्पर्क करने के माध्यम से अर्थ तक पहुँचते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

किसी एक या अन्य निश्चित समय पर, हम सभों ने ऐसे लोगों से मुलाकात की है जो कि विषयनिष्ठतावाद और आत्मनिष्ठतावाद के शिखरों पर चले जाते हैं। दोनों में से कोई भी पद्धति पवित्रशास्त्र की समझ और इसे जीवन में लागू करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हमें सदैव अपने मन में यह बात रखनी चाहिए कि हमारा त्रुटिपूर्ण, आत्मनिष्ठक दृष्टिकोण निरन्तर जो कुछ बाइबल कह रही है उसके ऊपर हमारी समझ को प्रभावित करता रहता है। परन्तु उसी समय, हमें सदैव अच्छे विश्वास से सुनने और स्वयं को जो कुछ बाइबल कहती है, के प्रति अधीन करने में प्रयासरत् रहना चाहिए। जब पवित्र आत्मा हमें पवित्रशास्त्र के इस तरह के अधिकार-संवाद मे संलग्न होने के लिए आशीषित करता है, तो उस समय हम बाइबल की अधिक और ज्यादा अच्छी जिम्मेदारी से व्याख्याओं के लिए आगे की ओर अग्रसर होंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम